MAINS MATRIX

विषय सूची

1. **क्या चीन इलेक्ट्रोलाइज़र बाजार पर कब्जा कर लेगा?**
2. **पत्रकारिता का संकट**
3. **लद्दाख राज्य का दर्जा विवाद**

क्या चीन इलेक्ट्रोलाइज़र बाज़ार पर कब्ज़ा करेगा?

मुख्य प्रश्न

- हरित हाइड्रोजन तकनीकें तेजी से क्यों आगे बढ़ रही हैं?
- वाणिज्यिक संयंत्रों में उपयोग होने वाले दो प्रकार के इलेक्ट्रोलाइज़र कौन-से हैं?
- चीन ने वैश्विक सौर पीवी मॉड्यूल बाज़ार पर कैसे कब्ज़ा किया?
- इलेक्ट्रोलाइज़र बाज़ार में चीन को सौर बाज़ार जैसी सफलता दोहराने में कठिनाई क्यों होगी?

अब तक की स्थिति

- हरित हाइड्रोजन जीवाश्म ईंधन का विकल्प बनकर चर्चा में है।
- हाइड्रोजन का उपयोग तेल रिफाइनिंग, अमोनिया और मेथनॉल उत्पादन में व्यापक रूप से होता है।
- हरित हाइड्रोजन तकनीकें (उत्पादन, भंडारण, परिवहन, अनुप्रयोग) तेज़ी से विकसित हो रही हैं।
- हाइड्रोजन उत्पादन में इलेक्ट्रोलाइज़र केंद्रीय भूमिका निभाते हैं (जैसे सौर ऊर्जा में सोलर पीवी)।
- जैसे सौर पीवी आपूर्ति श्रृंखला में चीन हावी रहा, वैसे ही इलेक्ट्रोलाइज़र क्षेत्र में भी रुझान दिख रहा है।

क्या चीन प्रमुख खिलाड़ी है?

- 2024 तक चीन दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रोजन उत्पादक बना:
  - वार्षिक उत्पादन: **36.5 मिलियन टन**।
  - हरित हाइड्रोजन: **1,20,000 टन** (विश्व उत्पादन का लगभग आधा)।
- **इलेक्ट्रोलाइज़र बाज़ार**:

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- चीन **अल्कलाइन (ALK) इलेक्ट्रोलाइज़र** की वैश्विक विनिर्माण क्षमता का **85% नियंत्रित करता है**।
- **ALK इलेक्ट्रोलाइज़र**: परिपक्व और सस्ते, परंतु नवीकरणीय ऊर्जा के उतार-चढ़ाव वाले लोड के लिए कम प्रभावी।
- **प्रोटॉन एक्सचेंज मेम्ब्रेन (PEM) इलेक्ट्रोलाइज़र**: नवीकरणीय ऊर्जा के लिए बेहतर, लेकिन महंगे।

चीन ने प्रभुत्व कैसे बनाया?

- पहले सौर पीवी मॉड्यूल बाज़ार पर कब्ज़ा किया:
  - सब्सिडी, एकीकृत आपूर्ति श्रृंखला, सस्ता कच्चा माल, और घरेलू मांग।
- इलेक्ट्रोलाइज़र बाज़ार में भी वही पैटर्न:
  - 2023 तक, बड़े पैमाने पर हरित हाइड्रोजन परियोजनाओं का **60% चीन में**।
  - इनर मंगोलिया में 2023 में **200 मेगावाट का सबसे बड़ा इलेक्ट्रोलाइज़र** स्थापित।
  - PEM इलेक्ट्रोलाइज़र उत्पादन बढ़ रहा है, पर ALK से पीछे।

प्रतिस्पर्धी उभर रहे हैं

- चीन से बाहर कंपनियां इलेक्ट्रोलाइज़र क्षमता बढ़ा रही हैं और नई सुविधाएँ स्थापित कर रही हैं।
- चीनी निर्माता: **LONGi, Envision, Guofa Hydrogen** वैश्विक स्तर पर साझेदारी कर रहे हैं (जैसे जर्मनी)।
- Envision ने दुनिया का सबसे बड़ा हरित हाइड्रोजन संयंत्र शुरू किया (अमोनिया उत्पादन हेतु)।

चुनौतियाँ चीन के लिए:

- हाइड्रोजन कई देशों की **राष्ट्रीय रणनीति** का हिस्सा है।
- **व्यापार प्रतिबंध, सुरक्षा जांच**, और **सिस्टम इंटीग्रेशन** की जरूरत (सिर्फ सस्ती कीमत काफी नहीं)।

सार (The Gist)

- 2024 तक, चीन दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रोजन उत्पादक (36.5M टन)।
- चीन के पास वैश्विक ALK इलेक्ट्रोलाइज़र क्षमता का **85% नियंत्रण**।

- चीनी सौर और पवन उपकरण कंपनियाँ (LONGi, Envision) हरित हाइड्रोजन क्षेत्र में उतर चुकी हैं।
- चीनी कंपनियाँ विदेशों में विस्तार कर रही हैं और हाइड्रोजन उत्पादन सुविधाओं के लिए सौदे कर रही हैं।
- लेकिन सौर ऊर्जा जैसी सफलता दोहराना कठिन होगा क्योंकि:
    - अन्य देशों की राष्ट्रीय हाइड्रोजन रणनीतियाँ।
    - व्यापार/सुरक्षा संबंधी प्रतिबंध।
    - कीमत से अधिक **सिस्टम इंटीग्रेशन और गुणवत्ता** महत्वपूर्ण होगी।

HOW TO USE IT

प्राथमिक प्रासंगिकता: जीएस पेपर III (अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, सुरक्षा)

यह विषय सीधे और बहु-आयामी रूप से जुड़ा हुआ है।

---

1. भारतीय अर्थव्यवस्था और नियोजन, संसाधनों का संकलन, विकास एवं रोजगार से संबंधित मुद्दे

- **कैसे उपयोग करें:**
  यह औद्योगिक नीति और रणनीतिक क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।
- **सौर पीवी से सबक:**
  लेख बताता है कि चीन ने किस प्रकार सब्सिडी, एकीकृत आपूर्ति श्रृंखला और घरेलू मांग के ज़रिए सौर बाज़ार पर कब्ज़ा किया।
  यह भारत के लिए चेतावनी है कि भविष्य में **आयात निर्भरता** से बचने हेतु इलेक्ट्रोलाइज़र निर्माण का अपना घरेलू पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना होगा।
- **राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन:**
  यह विश्लेषण भारत के *नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन* के पीछे की "क्यों" को स्पष्ट करता है।
  यह मिशन केवल पर्यावरणीय दृष्टि से ही नहीं, बल्कि **आर्थिक संप्रभुता** और **रणनीतिक आत्मनिर्भरता** के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

---

2. संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण एवं ह्रास, पर्यावरणीय प्रभाव आकलन

- **कैसे उपयोग करें:**
  हरित हाइड्रोजन उन "कठिन-से-नियंत्रित" क्षेत्रों के डीकार्बोनाइजेशन का प्रमुख साधन है, जैसे:

- तेल परिशोधन
- उर्वरक (अमोनिया उत्पादन)
- भारी उद्योग

- लेख स्पष्ट करता है कि हरित हाइड्रोजन भविष्य का **मुख्य स्वच्छ ऊर्जा वाहक** है।
- इसकी उत्पादन तकनीक पर महारत भारत के लिए अपने **जलवायु संकल्पों (NDCs, पेरिस समझौते)** को पूरा करने और **न्यायपूर्ण ऊर्जा संक्रमण** सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

---

3. आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ

- **कैसे उपयोग करें:**
  यह सीधे ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ा प्रश्न है।
- किसी एक देश (जैसे चीन) पर इलेक्ट्रोलाइज़र जैसी **महत्वपूर्ण ऊर्जा तकनीक** के लिए अत्यधिक निर्भरता एक **रणनीतिक कमजोरी** है।
- यह तेल और गैस के लिए किसी एक स्रोत पर निर्भर रहने जैसा है।
- किसी भी भू-राजनीतिक तनाव या व्यापारिक प्रतिबंध से भारत की हरित ऊर्जा योजनाएँ प्रभावित हो सकती हैं।
- लेख इंगित करता है कि अन्य देश पहले ही "व्यापार प्रतिबंध और सुरक्षा जांच" लागू करने लगे हैं, जो इसे एक रणनीतिक-संवेदनशील क्षेत्र बना देता है।

द्वितीयक प्रासंगिकता: जीएस पेपर II (अंतरराष्ट्रीय संबंध)

1. विकसित एवं विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का भारत के हितों पर प्रभाव

- **कैसे उपयोग करें:**
  हरित प्रौद्योगिकी में चीन की औद्योगिक नीति और उसका वैश्विक विस्तार भारत के बाहरी वातावरण को प्रभावित करता है।
- चीन की "रणनीति-पुस्तिका" (playbook) को समझना भारत को अपना जवाब तैयार करने में मदद करता है:
  - **घरेलू स्तर पर** → मिशन, सब्सिडी और स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा।
  - **अंतरराष्ट्रीय स्तर पर** → अन्य देशों के साथ साझेदारी कर आपूर्ति श्रृंखलाओं का विविधीकरण।

पत्रकारिता का संकट

प्रसंग (Context)

- पत्रकारिता, जिसे ऐतिहासिक रूप से "चौथा स्तंभ" कहा जाता है, आज एक **प्रणालीगत संकट** का सामना कर रही है।
- यह संकट केवल व्यक्तिगत पत्रकारों की कमजोरियों तक सीमित नहीं है, बल्कि मीडिया, राजनीति और समाज में संरचनात्मक बदलावों को दर्शाता है।

---

1. स्रोतों की बदलती भूमिका

पारंपरिक भूमिका:

- व्हिसलब्लोअर या "स्रोत" आधिकारिक कथनों को चुनौती देकर गलतियों को उजागर करते थे (उदा. अमेरिका के *Pentagon Papers*)।

वर्तमान प्रवृत्ति:

- अब प्लेटफ़ॉर्म ऐसे **अनाम स्रोतों** को उद्धृत करते हैं जो केवल **राज्य की आधिकारिक कथाओं को मजबूत करते हैं**, न कि उन्हें चुनौती देते हैं।
- इससे सूचना की **प्रामाणिकता और स्वतंत्रता** पर सवाल उठते हैं।

---

2. पत्रकारिता को कमजोर करने वाला प्रणालीगत संकट

- पत्रकारिता केवल आंतरिक कमज़ोरियों से नहीं, बल्कि दुनिया भर में कार्यपालिका की बढ़ती ताकत (इस्राइल, यू.के., अमेरिका, भारत) से प्रभावित है।

शक्तिशाली कार्यपालिका:

- व्हिसलब्लोअरों पर भारी लागत और दंड लगाती है (कानूनी, आर्थिक, व्यक्तिगत)।
- विधायिका और न्यायपालिका को डराती है।
- पारदर्शिता घटाती है: आधिकारिक चैनल अक्सर सच उजागर करने के बजाय छिपाने का काम करते हैं।

📌 **निहितार्थ:** पत्रकारिता अपनी **वॉचडॉग भूमिका खोकर** राज्य शक्ति का निष्क्रिय प्रवक्ता बनती जा रही है।

---

3. मीडिया की अनावश्यकता और नए रोल

मीडिया की अनावश्यकता:

- सोशल मीडिया से सरकारें/नेता सीधे नागरिकों से संवाद करने लगे हैं।
- यह सीधा संवाद अधिक "प्रामाणिक" माना जा रहा है, जिससे पारंपरिक पत्रकारिता को बाईपास किया जा रहा है।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

पत्रकारों के नए रास्ते:

- **भीड़ के साथ चलना:** लोकलुभावन राष्ट्रवाद से जुड़ना → तयशुदा राजस्व और सामाजिक वैधता।
- **काउंटर-प्रोपेगेंडा:** प्रमुख विमर्श को चुनौती देने के लिए वैकल्पिक कथाएँ बनाना।
- **नए उपकरण:** OSINT (ओपन-सोर्स इंटेलिजेंस) + जमीनी रिपोर्टिंग → तथ्य-आधारित पत्रकारिता (उदा. कर्नाटक में मतदाता सूची में गड़बड़ी का खुलासा)।

---

4. गंभीर वित्तीय समस्या

- **चुनौती:** उच्च गुणवत्ता वाली लोकहित पत्रकारिता के लिए कौशल, बुनियादी ढांचा और पूंजी चाहिए।

बाज़ार विफलता:

- केवल लाभ कमाने वाली पूंजीवाद प्रणाली इसे टिकाऊ नहीं बना सकती।
- उदाहरण: जैसे सार्वजनिक परिवहन → राज्य सहायता/सब्सिडी की ज़रूरत।

विरोधाभास: अमीर वर्ग मीडिया मालिक बनने की होड़ में है → स्वतंत्रता और हितों के टकराव पर सवाल।

---

5. सार्वजनिक वित्तपोषित मीडिया का संकट

पश्चिम में:

- सार्वजनिक प्रसारक (BBC, NPR) को पॉपुलिस्ट "पक्षपाती" कहकर हमला करते हैं और वित्तीय खतरे में डालते हैं।

भारत में:

- *प्रसार भारती* कभी वास्तविक स्वायत्तता हासिल नहीं कर पाया।
- यह स्वतंत्र आवाज़ बनने के बजाय अक्सर **सरकारी प्रचार का माध्यम** बन गया।

निष्कर्ष

- पत्रकारिता का भविष्य एक चौराहे पर खड़ा है।
- मूल प्रश्न: *लोकहित पत्रकारिता का वित्तपोषण कौन करेगा?*

विकल्प:

- निजी पूंजी → पक्षपात।
- राज्य सहायता → प्रोपेगेंडा का खतरा।
- समाधान: **लोकहित आधारित मॉडल** जैसे ट्रस्ट, सदस्यता, परोपकारी फंडिंग, सहकारी मॉडल पर विचार करना।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

How to use

प्राथमिक प्रासंगिकता: जीएस पेपर II (सुशासन)

यह सबसे उपयुक्त संदर्भ है। विषय आता है – *"सुशासन के महत्त्वपूर्ण पहलू, पारदर्शिता और जवाबदेही।"*

---

1. लोकतंत्र में सिविल सेवाओं, एनजीओ और मीडिया की भूमिका

- **कैसे उपयोग करें:**
  यह लेख मीडिया की भूमिका को "चौथे स्तंभ" के रूप में आलोचनात्मक दृष्टि से देखता है – एक **वॉचडॉग** जो सत्ता को जवाबदेह ठहराता है।
- **जवाबदेही का संकट:**
  मुख्य तर्क यह है कि पत्रकारिता अपनी वॉचडॉग भूमिका खो रही है।
  जब मीडिया **राज्य शक्ति का निष्क्रिय प्रवक्ता** बन जाता है या **लोकलुभावन भीड़ से जुड़ जाता है**, तो वह लोकतांत्रिक कर्तव्य निभाने में असफल हो जाता है।
  यह सीधे **पारदर्शिता और जवाबदेही** को कमजोर करता है।
- **संस्थाओं पर प्रभाव:**
  कार्यपालिका द्वारा **विधायिका और न्यायपालिका को डराना** दिखाता है कि कमजोर मीडिया सत्ता के केंद्रीकरण और अन्य लोकतांत्रिक संस्थाओं के ह्रास की अनुमति देता है।

---

2. विकास प्रक्रियाएँ और विकास उद्योग

- **कैसे उपयोग करें:**
  "वित्तीय संकट" सुशासन की एक प्रमुख चुनौती है।
- **बाज़ार विफलता:**
  लेख सही ढंग से पहचानता है कि गुणवत्तापूर्ण लोकहित पत्रकारिता एक **सार्वजनिक वस्तु (public good)** है, जिसे लाभ-प्रेरित बाज़ार टिकाऊ रूप से नहीं चला सकता।
  यह स्थिति स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी है।
- **राज्य वित्त पोषण की दुविधा:**
  भारत में *प्रसार भारती* का उदाहरण बताता है कि कैसे सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित मीडिया वास्तविक **स्वायत्तता** प्राप्त करने में विफल रहा और "सरकारी प्रवक्ता" बन गया।
  यह दर्शाता है कि ऐसे संस्थान डिजाइन करना कठिन है जो **सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित भी हों और स्वतंत्र रूप से संचालित भी हों।**

मजबूत प्रासंगिकता: जीएस पेपर IV (नैतिकता, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि)

पूरा संकट नैतिक दुविधाओं से भरा हुआ है।

---

1. सुशासन और सार्वजनिक जीवन में नैतिकता

- **कैसे उपयोग करें:**
  पत्रकारों और मीडिया मालिकों के सामने आने वाले विकल्प गहराई से नैतिक हैं।
- **पत्रकारों के नैतिक द्वंद्व:**
  - *"भीड़ में शामिल होना" बनाम "सत्य का पालन करना"* – लोकप्रियता और सुरक्षा हेतु लोकलुभावन ताकतों से जुड़ने का प्रलोभन बनाम अलोकप्रिय होने पर भी सत्य रिपोर्ट करने का नैतिक कर्तव्य।
  - *अनाम स्रोतों का उपयोग* – वास्तविक व्हिसलब्लोअर की सुरक्षा और राज्य-प्रचार के साधन बनने के बीच की रेखा।
- **सुशासन में सत्यनिष्ठा (Probity):**
  जब सरकार जानबूझकर सूचना छिपाती है और व्हिसलब्लोअरों को डराती है, तो वह **पारदर्शिता और जवाबदेही** की मूलभूत नैतिक शर्तों का उल्लंघन करती है।

---

2. भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)

- **कैसे उपयोग करें:**
  मीडिया के प्रति जनता की "पक्षपातपूर्ण" धारणा और "प्रामाणिक" सोशल मीडिया नेताओं की ओर उनका झुकाव यह दर्शाता है कि मीडिया पेशेवरों को **विश्वास और विश्वसनीयता** पुनर्निर्माण के लिए उच्च **भावनात्मक बुद्धिमत्ता** की आवश्यकता है।

लद्दाख राज्य का दर्जा बहस

---

1. पृष्ठभूमि और संदर्भ

- **विवाद की शुरुआत:** हाल ही में लद्दाख में हुए विरोध-प्रदर्शन, कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (NSA) के तहत गिरफ्तारी, तथा राज्य का दर्जा और संवैधानिक सुरक्षा की माँगें।
- **राजनीतिक बदलाव:** 2019 में जम्मू-कश्मीर के पुनर्गठन के बाद लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश (UT) बनाया गया।
- **मुख्य हितधारक:** यह बहस नागरिक समाज समूहों—**लेह एपेक्स बॉडी (LAB)** और **कारगिल डेमोक्रेटिक**

अलायंस (KDA)—और केंद्र सरकार के बीच है।

---

2. लद्दाख को राज्य का दर्जा देने के पक्ष में तर्क (सज्जाद कारगिली का दृष्टिकोण)

- **लोकतांत्रिक घाटा:**
  - जम्मू-कश्मीर का हिस्सा रहते हुए लद्दाख को विधायी प्रतिनिधित्व प्राप्त था और राज्य सरकार चुनने में भूमिका थी।
  - अब UT बनने के बाद सत्ता निर्वाचित प्रतिनिधियों के बजाय उपराज्यपाल (LG) के हाथों में केंद्रित है, जिससे जनता की सहमति के बिना नीतियाँ थोप दी जाती हैं।
- **संवैधानिक सुरक्षा का ह्रास:**
  - अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35A के अंतर्गत पहले सुरक्षा प्राप्त थी।
  - लद्दाख को छठी अनुसूची में शामिल करने का वादा अब तक अधूरा है।
- **आर्थिक व रोजगार से वंचित:**
  - दावा है कि पिछले छह वर्षों में लद्दाख से एक भी व्यक्ति राजपत्रित पदों पर नियुक्त नहीं हुआ।
  - स्थानीय भर्ती के लिए सार्वजनिक सेवा आयोग नहीं है।
- **सुरक्षा और देशभक्ति:**
  - लद्दाख के लोगों ने सीमाओं की रक्षा में हमेशा देशभक्ति दिखाई है।
  - प्रदर्शनकारियों को "राष्ट्रविरोधी" कहना अनुचित है।
- **नज़ीर (Precedent):**
  - सिक्किम को भी लद्दाख जैसी आबादी के साथ राज्य का दर्जा दिया गया था।

---

3. क्रमिक दृष्टिकोण के पक्ष में तर्क (आर. रंगराजन का दृष्टिकोण)

- **संवैधानिक मान्यता:**
  - सर्वोच्च न्यायालय ने लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बनाए जाने को वैध ठहराया है।
- **व्यावहारिक विचार:**

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- जनता की चिंताओं को स्वीकार करते हुए क्रमिक दृष्टिकोण अपनाने की सलाह।
- लद्दाख का विशाल क्षेत्रफल और कम जनसंख्या देखते हुए छठी अनुसूची से शुरुआत करना तर्कसंगत होगा—जिससे वित्तीय स्वायत्तता, जनप्रतिनिधित्व और आदिवासी भूमि अधिकारों की सुरक्षा मिलेगी।

- **सुरक्षा कोई बाधा नहीं:**
  - सीमाओं की सुरक्षा सेना द्वारा होती है, चाहे वह क्षेत्र UT हो या राज्य।
- **स्थिति से अधिक क्रियान्वयन:**
  - न तो छठी अनुसूची और न ही राज्य का दर्जा अपने आप में समाधान है; प्रभावी क्रियान्वयन महत्वपूर्ण है (पूर्वोत्तर राज्यों के उदाहरण दिए गए)।

---

4. वर्तमान UT मॉडल की विफलता

- **अप्रभावी स्वायत्त परिषदें:**
  - लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद (LAHDC) के पास स्पष्ट अधिकार नहीं हैं और यह LG प्रशासन पर निर्भर है।
- **वित्तीय नियंत्रण:**
  - केंद्र से लद्दाख को मिलने वाले बजट का लगभग 80% हिस्सा नौकरशाह खर्च करते हैं, जबकि निर्वाचित परिषदों के पास बहुत कम अधिकार है।
- **गिरफ़्तारी और डराना:**
  - प्रदर्शनकारियों पर NSA जैसे कठोर क़ानूनों का इस्तेमाल संवाद का गरिमाहीन तरीका माना जा रहा है।

---

5. सरकार का रुख और प्रत्युत्तर

- **सरकार द्वारा बताए गए सकारात्मक कदम:**
  - उच्च स्तरीय समिति का गठन।
  - अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण बढ़ाया गया।
  - पहाड़ी परिषदों में महिलाओं के लिए आरक्षण।
  - स्थानीय भाषा और संस्कृति की रक्षा के उपाय।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- सरकारी नौकरियों के लिए भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई।

- **मुख्य अंतर:**
  - प्रदर्शनकारियों का कहना है कि ये सब केवल **कार्यपालिका के आदेश** हैं, संवैधानिक गारंटी नहीं।
  - ऐसे आदेश कभी भी बदले या रद्द किए जा सकते हैं।

---

6. बहस का निष्कर्ष

- मूल माँग है—**लोकतांत्रिक सशक्तिकरण और संवैधानिक सुरक्षा।**
- एक पक्ष मानता है कि 2019 के बाद से महसूस किए जा रहे "असशक्तिकरण" का समाधान केवल पूर्ण राज्य का दर्जा है।
- दूसरा पक्ष चरणबद्ध समाधान का सुझाव देता है—पहले छठी अनुसूची, ताकि भूमि, पहचान और वित्तीय स्वायत्तता की तात्कालिक चिंताओं को संबोधित किया जा सके।
- समाधान इस बात पर निर्भर करेगा कि सरकार **अपरिवर्तनीय संवैधानिक सुरक्षा** देती है या केवल **अस्थायी कार्यकारी उपायों** पर भरोसा करती है।

How to use

प्राथमिक प्रासंगिकता: जीएस पेपर II (शासन, संविधान, राजनीति, सामाजिक न्याय)

यह सबसे सीधा और महत्वपूर्ण फिट है। यह मुद्दा भारतीय संघीय संरचना और शासन के केंद्र में बैठता है।

---

1. भारतीय संविधान – ऐतिहासिक नींव, विकास, विशेषताएँ

- **कैसे उपयोग करें:** यह बहस भारतीय संविधान में निहित विषम संघवाद (asymmetric federalism) का एक जीवंत केस स्टडी है।
- **विशेष दर्जा बनाम केंद्र शासित प्रदेश:**
  - लद्दाख का विशेष दर्जा (अनुच्छेद 370) से केंद्र शासित प्रदेश में परिवर्तन एक महत्वपूर्ण संवैधानिक घटना है।
  - इस बदलाव के गुण-दोष पर चर्चा करने के लिए इस बहस के तर्कों का उपयोग किया जा सकता है।
- **छठी अनुसूची:**

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- लद्दाख को छठी अनुसूची में शामिल करने की माँग केंद्रीय है।
- यह आपको छठी अनुसूची के उद्देश्य—कुछ पूर्वोत्तर राज्यों में स्वायत्तता और आदिवासी पहचान की रक्षा—तथा इसकी लद्दाख पर संभावित उपयोगिता पर चर्चा करने का अवसर देता है।

---

2. संघ और राज्यों के कार्य एवं उत्तरदायित्व

- **कैसे उपयोग करें:** यह केंद्र बनाम क्षेत्र (Centre vs Region) की बहस का क्लासिक उदाहरण है।
- **लोकतांत्रिक घाटा:**
  - सत्ता निर्वाचित विधानसभा के बजाय एक नियुक्त उपराज्यपाल (LG) के हाथों में केंद्रित है।
  - यह संघ शासित प्रदेशों में लोकतांत्रिक शासन की चुनौती को रेखांकित करता है, जो प्रतिनिधि लोकतंत्र के सिद्धांत से विपरीत है।
- **वित्तीय स्वायत्तता:**
  - लगभग 80% बजट पर नौकरशाहों का नियंत्रण स्थानीय स्वशासन और राजकोषीय संघवाद की कमी को दिखाता है।

---

3. विभिन्न अंगों के बीच शक्तियों का पृथक्करण

- **कैसे उपयोग करें:**
  - प्रदर्शनकारियों के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (NSA) का इस्तेमाल कार्यपालिका की शक्ति के प्रयोग और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व असहमति (अनुच्छेद 19) जैसे मौलिक अधिकारों पर इसके प्रभाव पर प्रश्न उठाता है।

---

4. विकास प्रक्रियाएँ और विकास उद्योग

- **कैसे उपयोग करें:**
  - स्थानीय रोजगार (PSC का न होना, राजपत्रित पदों पर भर्ती की कमी) और भूमि व संसाधनों पर नियंत्रण से जुड़े मुद्दे इस बहस के केंद्र में हैं।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- यह राज्य का दर्जा पाने की राजनीतिक माँग को क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास से जोड़ता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"